Samvit Sphulinga

★

BULLETIN OF SAMVIT SADHANAYANA

FOR PRIVATE CIRCULATION
TO SADHAKAS ONLY

OCTOBER, 19

PRINTED MATTER

To _____

_____

_____

From

SANTASAROVAR,
Mount Abu (Raj.)

Rajasthan Printers, Jodhpur.

संवित्

स्फुलिंग

संवित् साधनायन का विमर्श--पत्र

3

वैयक्तिक प्रसारणार्थ
मानसरोवर, आबू पर्वत

हेमन्त करण
विक्रम २०३२

त्रिधाम

अग्नि का ध्यान

हेमाश्वत्थसुरद्रुमोदरभुवो निर्यान्तमश्वाकृतिं
वर्षन्तं धनधान्यरत्ननिचयान् रन्ध्रैः स्वकैः सन्ततम् ।
ज्वालापल्लवितस्वरोमविवरं भक्तार्तिसंभेदनं
वन्दे धर्मसुखार्थमोक्षफलदं दिव्याकृतिं पावकम् ॥

"सुवर्णधातु अश्वत्थ काष्ठ एवं कल्पवृक्ष के कोटर से निर्गत तैजस तत्त्व दिव्य अश्वाकृति में परिणित हो दृश्यमान है। अश्व के प्रत्येक रोम रन्ध्र से अग्नि ज्वाला निकल रही है और नेत्रादि छिद्रों से निरन्तर धनधान्य रत्न की वृष्टि हो रही है। भक्तों का दुःख मर्दन करते हुए उनको धर्म, सुख, वांछितार्थ और मोक्ष देने में निरत अग्नि देव को यह मेरी वन्दना है।"

★

जडमय तन के प्रत्येक कण में प्रज्ज्वलित चेतन पावक ! शरीर एक स्यन्दन है। इसमें कैसा यह स्पन्दन ! अन्दर ही अन्दर जुते हुए वाजिगण, पार्थिव रथ की रग-रग में गति उत्पादक ये प्राणाश्व।

रोम कूप में, नख विकास में, रुधिर की उष्ण धारा में उसकी ही ज्वालाएँ। करणों से निसृत सहस्रों हजारों कर्म, कर्म से फल वृष्टि, फल-भोग से विश्वान्न की वृद्धि, विश्वान्न से ज्ञानाहुति, आहुति से अग्नि का पुनः प्रज्ज्वलन।

चक्र के केन्द्र-संवित से इस क्रीडा का स्तवन हो।

हेमन्त

पथ की चुभन थकन से पूत तन,
हरी भरी घाटियों से पूरित मन–
हिम के ऊपर धवल हिम,
सबके ऊपर विमल गगन ।

★

हिम की सन्निधि जिसने मुझे बाहर से अधिक अन्दर से छुआ—
लगी, प्रेम स्वीकृति की उष्णता में बहने लगी । मैं भी खुलने लगा ।

जीवन के सतरंगे सपने, मेरे अपने हिम में से मुग बुगाते, गीत गा
रहे थे, बहने लगे सरित बन—नीचे और नीचे ।

★

ओ हिम ! अब जब, तब मेरा मन कपोत नील गगन में उड़ उड़
ही बात पूछता है, जब साँझ ढलने लगे तो यह राजहंस बने, तुम तक
ही उड़ान भरे–

यह एक मात्र शुभ्र स्वंप्न रह गया गहन निस्तब्धता में ।

सदाचारानुसंधानम्

सर्व वेदान्त सिद्धान्तैर्ग्रथितं निर्मलं शिवम् ।
सदाचारं प्रवक्ष्यामि योगिनां ज्ञान सिद्धये ।। १ ।।
प्रातः स्मरामिदेवस्य सवितुर् भर्ग आत्मनः ।
वरेण्यं तद्धियोयोनश्चिदान्दे प्रचोदयात् ।। २ ।।

भगवान भाष्यकार की मनोहारिणी रचना 'सदाचारानुसंधानम्' [illegible] सदाचार का तात्पर्य उस जीवनक्रम को अपनाने से है जो ब्रह्मानुभूति अभिव्यक्ति एवं ब्रह्मनिष्ठा तक जीवन के विकास के लिये अनुकूलता एवं पात्रता प्रदान करने में सक्षम हो । मगलाचरण के प्रथम श्लोक में ही प्रतिपाद्य विषय, उसकी विशेषता, हेतु और विचार शैली को निरूपित करते हुए कहा गया है- समस्त वेदान्त सिद्धान्तों के विविध पुष्पों को निर्मल एवं कल्याणकारी जो सूत्र पिरोये हुए है तथा उन्हें सुन्दर माला का रूप देकर सार्थकता प्रदान कर रहा है उसी के अनुसंधान को दैनिक सदाचार के विभिन्न अंगों के रूपक में भली भाँति बताऊँगा । ज्ञानसिद्धि कहकर लक्ष्य को भी निर्धारित कर दिया । पात्रता के सम्बन्ध में 'योगिनां' कहकर स्पष्ट कर दिया कि जो परम् वैराग्यवान् आत्मोपलब्धि के लिये यत्नशील हैं उनकी ज्ञाननिष्ठा में दृढता एवं सातत्य उसके आदर्श दिग्दर्शनवत् यहाँ सदाचार का वर्णन है ।

"अनाचारस्तु मालिन्यं अत्याचारस्तु मूर्खता ।
विचाराचार संयोगः सदाचारः प्रकीर्तितः ।।

अनाचारजन्य मालिन्य एवं अत्याचार की मूर्खताविवर्जित यह ऐसा आचार है जो विचारजन्य है, युक्तिसगत है । सत् अर्थात् ब्रह्म की अभिव्यक्ति के लिये अनुकूल जीवनपथ पर उत्तरोत्तर बढ़ना है । उस क्रम का प्रथम सोपान है प्रातः स्मरण !

"मैं समस्त लोकों के जन्म का आदि स्रोत तथा ज्ञानस्वरूप आत्मसूर्य का प्रातः स्मरण करता हूँ जो विश्व को पूर्णता प्रदान करता है और विश्व

जिसकी लीला में लीला का अंग बनकर ही जिसे आवृत करता है, सद्योजात आत्म-स्वरूप को मैं प्रेमपूर्वक वरण करता हूँ। वह मेरी वृत्ति चिदानन्द में प्रवेश के लिये उन्मुख करे।"

★

संस्कृत परिवारों में ब्राह्ममुहूर्त में जग जाना स्वभाव बन जाता है। जागरण मात्र में तात्पर्य नहीं। जगकर क्या किया? जागरण का विनि किसमें?

★

जागरण रात्रि और दिवस की सन्धि में ही शुभ क्यों? इसी वेला नाम ब्राह्ममुहूर्त क्यों? गहन निद्रा से जागृति में आते ही प्रथम कृत्य क्यों? आधिभौतिक ज्वलित प्रकाशपुंज सूर्य किस की ओर संकेत कर महत्ता को प्रकट करते करते आवृत कर रहा है? किस प्रकार उसे आवरण दे में अपनी असमर्थता व्यक्त कर रहा है?

★

जागरूकता की चमक और 'जानामि' की विविध रंग योजनाओं से अलंकृत परम् प्रेमास्पदता की जीवनदायिनी ऊष्मा को लिये कण-कण में चैतन्यता रूप से संक्रमण करते देवाधिदेव ही हमारे ध्यान का, प्रातः स्मरण का केन्द्रबिन्दु हैं। उनका ही ज्ञानालोक बहिरस्पन्दमान हो, क्रिया बनकर जगत रूप से अपने को प्रकट कर रहा है।

★ ★ ★

गुरुभ्यो नमः

"सुनते हैं प्रायः कि ब्रह्म ही गुरु है। तब तो कोई भी गुरु बन नहीं सकते।"

"ऐसा क्यों?

"क्योंकि ब्रह्म वह है जो बनता नहीं।"

"तो क्या ब्रह्म वन्ध्यापुत्रवत् है, या खरगोश के सींग समान?

"नहीं, यह तो असत् का लक्षण है। हो सकता है कि ब्रह्म वही है जो नहीं बनते हुये ही बनता है।"

"ठीक। इसी प्रकार गुरु भी नहीं बनते हुये ही बनते हैं।

"इसको कैसे समझें?"

गुरु बनते हैं, क्योंकि प्रकट होते है, क्योंकि हमारे पूर्वसिद्ध बन्धन तोड़ते हैं उत्पन्न ज्ञान के द्वारा।

गुरु नहीं बनते हैं, क्योंकि नित्यसिद्ध हैं, क्यों कि उत्पन्न ज्ञान स्मृति-मात्र है जिसका विषय शुद्ध अहं का ज्ञान है जो कि हमेशा था।

स्वनिरीक्षण की चाह वाला 'अहं' शिष्य है। स्वनिरीक्षक आनन्द वाला अहं गुरु है। वह बिना देखे ही देखता है।

उसकी दृष्टि को अपनी में एक करदो।

ज्योत्स्ना

मेरी सत्यता
संकल्प विशुद्धि
संयमित गति

ये सब माँ !
तेरी मधुरिमा ।

तेरा पूजन
जगत का तोषण
स्वात्म पोषण

एक हो माँ !
संवित् पूर्णिमा ।।

★

जिसे प्रेम कहते हैं, वह न रंग रूप में न माप तोल में ।
वह न सीधा न कुटिल,
न कठिन न सरल,
न ठोस न तरल ।

जब प्रेम मूर्ति का दर्शन होगा, मुख न किसी का दिखाई देगा ।
एक सत्ता केवल,
एक विस्तार उज्ज्वल,
एक स्पन्द निश्चल ।

Samvit Sphulinga

The same forces that cast you down the ravine have installed secret foot-holds and grips all the way—for you to discover and use. Rise on the rising rocks !

This mountain is a big limb of the big earth; this foot, this hand is a little limb of this little earth. The same forces have shaped them and wait for you now—to offer limb to limb, earth to earth, and come up to be crowned with the stars.

★

Sanasar

A bowl of beauty held by hills interlaced with graceful pines, with the distant snow ranges of Lahaul-spiti etched on a porcelain blue lid of the sky—Sanasar ! Thy name invokes the Sons of Light. This tiny fresh-water lake did once reflect the bending forms of the Kumaras. The voice of the sages even now reaches us like a waft of choice fragrance from across aeons of time. It is the whispering of the same authentic life-chiselling massage that is heard from the Master by those that have gathered to adore at the altar of Samvit set in the heart of the valley.

The whisper gathers an intensity, an urgent appeal grows into a rumble, bursts out as thunder-clap—descending down in torrential pour, dancing in a thousand lightning flashes of the mind. That is how the theme of morning contemplation develops and synchronises with the scene around.

★

"The darkest hour of midnight. Heard you the whistling breeze against the glass walls around you ? The Lord is willing to enter stealthily even through a chink in your door."

★

A gust of wind breaks the heavy clouds into shreds and what a promising day awaits the eager pilgrims at Sanasar ! The Master's hand spans the limitless azure vastness and points at the silver peaks that beckon to us to scale them.

★

"Dare you aspire so high? Dhiyo yo nah prachodayaat ! Aspiration is ineffectual ceaseless atma-anatma vichara and assiduous application of it. An elephant for all its might is swept off by the gushing stream. Let our ideal be the fish that glides with the crest and trough of vicissitudes. Life needs neither the bait of hope nor the stimulation of passions for its sustenance."

★

The wanderings in the woods of Sanasar were joyous, aimless—and without a thought either for past or future—and yet under the unseen loving lead of the divine Mentor ! So be it with our life.

★

"Discover the potential point of existence between sleep and wakefulness, the sandhi, that reveals the waters of the spirit untainted by desire—the chidakasa that is not unveiled by the primordial cloud of Maya. Catch yourself—before the Lord playfully initiates the world-process of I-thou relationship and plunges you into the darkness of deluge."

You, He, I

"Sir, you should not allow such worthless people li Venu to gather around you", a disciple started saying a narrated all the faults of that person.

The Master silently heard everything and sigh and said, "My boy, if Acharya Shankara were to be in o midst, it will be very easy for him to point out more faul in me than what you have listed against your brothe And yet you bear with me, I bear with myself I don't thin it will be too much for us to bear with Venu—if only approach him with that intention."

"But Sir, you invoke by your excellence a deep faith me and so I can bear with you, nay, I worship you. Is possible with respect to others ?"

"If my excellence, which you believe in, can co-ex with the infirmity which Shri Shankara may see in m what makes you think Venu will be one mass of pu corruption and not hold a single germ of good in hi Rise within yourself to discover that good in him and bui your faith around it.

To treat diseased souls is entirely in the hands of Go To love the least manifestation of divinity in them is o only significant role in this mysterious vast called life."

★ ★ ★

Samvit Sadhaka

is flute-like, simple and straight ;
is leaf-like, born on the branch and buried in the root ;
is arrow-like, powerfully poised for release any moment.

Of the Ayana

The Spanda-cum-yatra (SCY) in the Kashmir valley organised by the Ayana from 25.8.75 to 12.9.75 was unique in the sense that selected Samvit Sadhakas from Madras, Bangalore, Bombay, Ahamedabad, Abu, Jodhpur, Jaipur, Delhi and Jammu all participated as one functioning intimate unit to create a Samvit Spanda. This is also the first Himalayan Spanda for the Ayana.

The participants were taken from Jammu by a special bus to Baltal near Sonmarg, a famous hill-resort in the Kashmir valley. At Baltal, tents were pitched in an idyllic spot on the bank of the Sindh-Nala river, along whose course runs the short route to the holy cave of Shri Amarnath. This rather unfrequented route was preferred to the more popular Pahalgam-route for the sake of its brevity, newness and venturesome nature. The party of 26, riding local ponies, reached the holy cave on 27th of August by afternoon and pooja of the colossal 10 feet ice-lingam was conducted by Poojya Swamiji with chanting of Rudra-mantras and archana with bilva for over an hour, at the end of which the entire

Shiva-linga came down from its rock-pedastal sliding with a noise of thunder that shook the beings off all assembled there and gave them an experience akin to that of Arjuna's vision of the Virat.

The adventurous journey back only helped to consolidate that feeling of awesome presence of the Lord and the blessedness of being held by it, through countless births and deaths. Visiting the various ancient shrines on the way, the party reached Sanasar on 3rd September morning. Sanasar, a retreat which Shri Swamiji had visited and selected the previous year, provides ideal atmosphere and facilities for Samvit Spanda. The sadhakas made full use of them and through willing co-operation and the influence of satsang, built up an intimate and integral state of being in which every needle of the pine-trees around began to shimmer with Samvit radiance. From the evening of 3rd September to the morning of the 12th it was one continuous natural flow of meditation.

Shri Swamiji in his morning discourses dealt with selected slokas from Shri Shankara's "Sadacharanusandhanam." Vimarsha was conducted in the afternoons on pre-determined topics for which the sadhakas had come fully prepared. Evenings were devoted to Ashtamoorti-anusandhana, recitation and japa.

The entire burden of organising and executing the arrangements for SCY lay on the shoulders of Samvit-sadhaka Shri Ramprakash. He, with the full co-operation of his family and band of devoted friends, came up to the occasion admirably in a Samvit spirit. The Ayana is deeply thankful to all those who helped in this work.

★

Samvit Satra at Jodhpur began, as in the last year on the Sharat-poornima and lasted till Deepotsava. This winter Shri Swamiji will be visiting Madras, Coimbatore, Kanya-kumari and Trichanapally after which Bangalore will celebrate its fourth Samvit-Satra from 23rd Nov. to 14th December. This will be followed by a ten day Satra at the Jnana-sadhana-Ashram on the banks of Narmada at Broach from 23rd December.

★

Celebration for the Season

14th December Gita jayanti.